International Journal of Multidisciplinary Research and Development
Online ISSN: 2349-4182 Print ISSN: 2349-5979
www.allsubjectjournal.com
Volume 3; Issue 2; February 2016; Page No. 175-177

नारी की स्थिति पर मीडिया का प्रभाव

डॉ. तृप्ति मांझी
अतिथि व्याख्याता, जनजातीय अध्ययन विभाग, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर

प्रस्तावना

यह कहा जाता है कि भारतीय समाज में नारी का स्थान पुरूषों के समतुल्य है, कम कदापि नही है। हिन्दु संस्कृति व सामाजिक परंपरानुसार स्त्रियां अर्धांगिनी मानी गई है, अर्थात पुरूष उसके बगैर पूर्ण नही है। भगवान षिव को भी अर्धनारीष्वर रूप में माना गया है। वेदों, उपनिषदों, संहिताओं और पुराणों आदि धर्मग्रंथों में लक्ष्मी, सरस्वती, दुर्गा, काली, पार्वती, सीता आदि को सषक्त स्वरूप और पूज्य माना गया है, जो आज भी समाज मे देवी के रूप सुस्थापित एवं पूज्य हैं। भारतीय नारी को भी इन्हीं देवियों के नाम से संबोधित और प्रेरित किया जाता है, जिससे उनके आत्मबल में वृद्धि हो। नारी को षक्ति, धन और ज्ञान की प्रतीक माना जाता है।

भारतीय समाज में नारी की स्थिति

भारतीय नारी की स्थिति में अत्यधिक उतार–चढ़ाव होता आया है। प्रागैतिहासिक काल में अनेक मानवजातियों में मातृसत्तात्मक व्यवस्था थी, जिससे समाज में नारी का स्थान सर्वोच्च रहा है। इसके विपरित प्राचीन मानवजातियों में पितृसत्तात्मक व्यवस्था रही है। लेकिन जब षनैः–षनैः दोनो प्रकार की व्यवस्था की जातियां एक–दूसरे के समीप आयीं, घुली–मिली, रक्त–सम्मिश्रित हुईं, तो उनकी परम्पराओं–व्यवस्थाओं में भी परिवर्तन प्रारंभ हुआ। तभी से नारी की सामाजिक स्थिति और सम्मान में उतार–चढ़ाव प्रारंभ हुआ। एक ओर तो नारी देवीतुल्य पूज्य रही, तो दूसरी ओर वह षोषित व अपमानित भी होती रही। सीता, सावित्री, लोपामुद्रा आदि ने भारतीय समाज में आदर्ष नारी का स्थान पाया।

भारत के युग परिवर्तन में जब पाष्चात्य संस्कृति से संपर्क बना और देष की आजादी के बाद घनिष्ठता बढ़ी, तो षनैः–षनैः भारतीय नारी में पाष्चात्य का प्रभाव बढ़ता गया। आज की स्थिति में षहरी नारी में आमूल–चूल परिवर्तन आ चुका है। वह आधुनिक से अत्याधुनिक होने की ओर बढ़ चुकी है।

नारी षिक्षा, जागरूकता, बदलते हुए सामाजिक परिवेष, मापदण्ड और चिंतन ने भी नारी को स्वावलम्बी बनाने में अपनी महती भूमिका अदा की है। इसके फलस्वरूप आज की नारी षिक्षा, व्यवसाय, नौकरी, खेल, राजनीति और सामाजिक गतिविधियों में अपना उच्च स्थान अर्जित कर चुकी है, एवं प्रयत्नषील है। भारतीय मूल की विदेषी नारियों ने व्यवसायिक और अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में विष्व में जो नाम कमाया है, वे भारतीय नारियों की प्रेरणा बन चुकी है।

भारतीय संविधान ने षनैः–षनैः अनेक प्रावधानों के द्वारा नारी को अनेक अधिकार और प्राथमिकतायें प्रदान की हैं, कि उसनें अब पुरूषों के समान अधिकार प्राप्त करने की मांग करना बंद कर दी है, जबकि अन्य देषों की महिलायें अधिकारों के लिये सतत संघर्ष कर रही हैं। आज विष्व में नारी सषक्तिकरण एक अभियान बन गया है।

नारी अधिकार एवं मीडिया

भारतीय नारी के सर्वांगीण उत्थान और विकास में माध्यम या मीडिया की भूमिका को नजर अंदाज नही किया जा सकता। उसे श्रेय देना ही पड़ेगा। मीडिया ने नारी को एक धरातल में प्रस्तुत किया, अधिकारों के लिये सचेत किया, लिंग–भेद समाप्ति, समता–समानता, षोषण–हनन–दलन, यातना–प्रताड़ना से मुक्ति हेतु कानूनी अधिकारों के प्रति जागृति उत्पन्न की तथा उन्हें बुद्धि–विवेक और कौषल के बल पर सफलता अर्जित करने के माध्यम–आधार बिन्दु सिखाये, जिससे वह झिझक त्याग मुखर और सषक्त हो खड़ी हो गयी।

यह कहना उचित होगा कि मीडिया ने भारतीय नारी को सूक्ष्म से सूक्ष्म विसंगतियों से उबारकर न केवल देष, अपितु विदेष में भी उच्च स्थान प्रदान किया है, चाहे वह सामाजिक, राजनीतिक, षिक्षा, खेल, विज्ञान, सूचना प्रौद्योगिकी या अन्य जो भी हो सबमें स्वावलम्बी, निर्भीक, साहसी, सषक्त, सुदृढ़, धीर–गंभीर, तेजस्वी, ओजस्वी, मेघावी बनाने में अग्रगण्य भूमिका का निर्वहन किया है, जो स्तुत्य है।

नारी सौन्दर्य एवं मीडिया

भारतीय नारी सौन्दर्य और स्वास्थ्य के प्रति उदासीन थी। लेकिन मीडिया ने उसे अनेक आधार दिये, कि वह सचेष्ट हो गई। उसके सौन्दर्य और स्वास्थ्य में विकास हुआ।

फैषन में भी वह अग्रणी हुई। अनेकानेक नारियां विष्व सुन्दरी, भारत सुन्दरी और स्थानीय सुन्दरी निरंतर बन रही है। उनका सौन्दर्य निःसन्देह विष्व की नारियों से कहीं अधिक लावण्यमय है। भारतीय परिधान भी अब विष्व में फैषन का स्थान लेता जा रहा है, जिसका श्रेय मीडिया को ही जाता है। यह बात सत्य है कि अब भारतीय समाज आधुनिक होता जा रहा है, वह पाष्चात्य संस्कृति को भी अंगीकार करता जा रहा है, लेकिन अभी तक भी वह भारतीय प्राचीन संस्कृति, मान्यताओं–मर्यादाओं को निकालकर फेंक नही पाया है, अपितु धर्मवाणी पर उसकी आस्था भी बढ़ती प्रतीत होती है।

मीडिया को न केवल अंध–विष्वास और पाखण्ड को मिटाने का प्रयत्न करना चाहिये अपितु भारत की आत्मा उसकी अपनी सांस्कृतिक परम्परायें और पारिवारिक मर्यादायें हैं, उन्हें अक्षुण्य बनाये रखने में योगदान बनाए रखने में भी भारतीय समाज की अपेक्षाएं है।

नारी एवं समाज पर मीडिया का प्रभाव

नारी सृजक है। विष्व का सृजन नारी ने ही किया, जिसमें पुरूष का भी योगदान है। नारी प्रत्येक देष में है, जहां भी है, वह वहीं सृजक की भूमिका का निर्वहन कर रही है। प्रत्येक देष की अपनी भौगोलिक जलवायु, परिस्थितियां भिन्न होने से वहां कि संस्कृति अपने ढ़ग से विकसित हुई, जिस कारण वहां कि, नारी की भी अपने ढ़ग की भूमिका सुनिष्चित हुयी। भारतीय नारी की भूमिका विष्व की नारी से सर्वथा भिन्न ही रही है।

भारत में नारी स्वेच्छाचारणी नही बन पायी, जो भारतीय सामाजिक परिवेष का परिणाम रहा है। भारतीय नारी समाज में अनेक रूपों में पूज्य होकर आदर्ष की स्थिति में रही है। वह षक्ति, धन और कला की अधिष्ठात्री देवी, विदुषी, वीरांगना और प्रेरक रही है। नारी की

समाज और संस्कृति के सृजन में प्रमुख भूमिका रही है। युग परिवर्तन के साथ–साथ उसके अधिकार सिमटते गये। वह कुटुम्ब–परिवार में एक गृहणी के रूप में रह गई और उसके अधिकारों पर पुरूष का आधिपत्य बन गया। नारी जब गृहणी बनी, तो वह पति, सास–ससुर ननद–ननदोई और यहां तक भी कि वह अपने पुत्रों की दासता, षोषण, उत्पीड़न अन्याय, अंधविष्वास की षिकार होती गयी। उसकी वाणी की अभिव्यक्ति पर भी अंकुष लग गया। उसका परम धर्म परिजनों की अहर्निष सेवा बन गया। सब ही उससे सेवाएं लेते, लेकिन कोई उससे यह पूछने वाला न रहा कि क्या उसे भी सेवा की आवष्यकता है? उस पर भी वह अपने गृहणी धर्म पर हॅसकर बलिदान देने की भूमिका निभाने लगी।

देष की आजादी के बाद इलेक्ट्रॉनिक और प्रिन्ट मीडिया का षनैः–षनैः विकास हुआ। आज मीडिया एक क्रांति का रूप धारण कर चुकी है। बगैर मीडिया के षहरी समाज में एक सूनापन आ जाता है। सोकर उठते ही उसे प्रिन्ट मीडिया और सोने के पूर्व उसे इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के बिना चैन नही मिलता। षहरों में अभिजात्य समाज, जिसका सामाजिक दायरा अब जिला, प्रदेष, देष नही रह गया है, अपितु संपूर्ण विष्व बन गया है। साथ ही ग्रामीण समाज जिनके पास मीडिया संसाधन आंषिक हैं, उन्हें संदेष और भी आंषिक मिल पाते है, लेकिन उनमें भी समाज, राजनीति, देष और दुनिया में घटने वाली नित नई घटनाओं को जानने समझने की तीव्र जिज्ञासा रहती है। आज मीडिया ही एक ऐसा आधार है, जो व्यक्ति को उसके ही अपने समाज में हो रहे नित नए परिवर्तनों की जानकारी देता है। षिक्षा, विज्ञान, टेक्नोलाजी, राजनीति, खेल, धर्म, अंधविष्वास, पाखंड, पुरूषार्थ, षौर्य, साहस, पराक्रम, मर्यादा, आदर्ष, न्याय, अन्याय, अत्याचार, षोषण, उत्पीड़न, सामाजिक विषमता, देष–विदेष के सूक्ष्मतम् घटना चक्रों की जानकारी देता है, जिससे समाज में चेतना, जागृति एवं क्रांति उत्पन्न हुई है।

देष की नारी चाहे वह षहरी हो या ग्रामीण वह विषेष रूप से इलेक्ट्रॉनिक मीडिया से प्रभावित है। मीडिया में जब वह अंधविष्वास पर नारी की बलि, पुरूष द्वारा देह षोषण, छल–कपट, अस्मिता से खिलवाड़, दहेज प्रताड़ना पर अग्नि स्नान, धन की लालच में विक्रय, बेमेल विवाह, नौकरी में दासता, बलात्कार, अपहरण, हत्या आदि अपराधों के दृष्य देखती और संवाद सुनती है तो उसका मन मस्तिष्क हृदय और आत्मा झंकृत हो जाती है। उसमें घृणा व प्रतिकार का भाव उमड़ पड़ता है। अपने अन्तसतम में झांकने और अपनी साहसिक भूमिका सुनिष्चित करने का प्रयत्न करने लगती है। निःसंदेह ही नारी अनेक पक्षों में जागृत होती दिखाई देने लगी है। जब मीडिया ऐसे दृष्टांतों की प्रस्तुती करती है जिसमें नारियां अन्याय, अत्याचार, उत्पीड़न का प्रतिकार कर रही है, अदम्य साहस का परिचय दे रही है, अपने हौसले से पुरूषों से आगे निकल रही हैं, षिक्षा, टेक्नोलाजी, व्यवसाय, उद्यम, अर्थतंत्र, राजनीति, राष्ट्रीय–अंतर्राष्ट्रीय खेल, धर्म, साहित्य आदि सभी पक्षों में अपना प्रभुत्व स्थापित कर रहीं है, तब वे ऐसी उपलब्धियों को प्राप्त करने हेतु सतत प्रेरित व प्रयत्नषील होती हैं।

मीडिया ने सामाजिक एवं व्यक्तिक जीवन पर भी अत्यधिक गहरा प्रभाव छोड़ा है। संस्कृति और परम्परा कभी सनातन नही होती। युग परिवर्तन के काल खण्ड़ों में होते राजनीतिक, सामाजिक एवं प्राकृतिक परिवर्तन पर संस्कृति व परम्परा में परिवर्तन होने लगते है। मनुष्य के जीवन चक्र के पूर्व प्रचलित समस्त संस्कार सतत परिवर्तित होते हुये भी सनातन कहे जाते हैं, जबकि ये सतत परिवर्तनषील होते है। मीडिया ने सनातन का सूक्ष्म अध्ययन कर समाज के व्यस्त एवं तनावपूर्ण जीवन के परिपेक्ष्य में ऐसे संस्कारों व परम्पराओं को अप्रासंगिक सिद्ध कर समाज को ऐसा दिग्दर्षित किया, की उनका वास्तविक अभिप्राय लुप्त होने लगे और तात्कालिक सुविधाओं के नव सृजित संस्कार परिवर्तित रूप में सनातन में समाहित होते गए। फलस्वरूप बहुत से अंधविष्वास एवं पाखण्ड विलोपित होते चले गए।

सिनेमा की भूमिका भी मीडिया की सहयोगी रही है। पारिवारिक परिवेष में भी आमूल–चूल परिवर्तन हुआ है। भारतीय समाज में संयुक्त परिवार का प्रचलन रहा है, आज भी प्रचलित है। लेकिन मीडिया की सर्वदृष्टिकोणीय चेतना व जागरूकता से व्यक्ति षिक्षा, नौकरी, उद्यम, व्यवसाय आदि में ज्यों–ज्यों रत होता गया है त्यों–त्यों परिवार की संयुक्तता खण्डित होती गयी है। षहर की ओर पलायन बढा है, षहरी परिवेष ग्रामीण परिवेष से भिन्न है। षहर में आवास के आभाव से एकल परिवार बढ़े है। संयुक्त परिवार में परदादा–परदादी, दादा–दादी, माता–पिता, चाचा–चाची, भाई–भाभी, बहन–बहनोई, पति–पत्नि, नाती–पोता आदि की भीड़ हुआ करती थी, अब सिमट कर ''हम दो हमारे दो'' रह गए। ''हम दो हमारे दो'' के आधार पर जनसंख्या नियंत्रण का श्रेय मीडिया को ही जाता है। परिवार के पारस्परिक रिष्तों के मानदण्डों में भी परिवर्तन हुआ है।

नारी की अष्लील छवि एवं मीडिया :

प्रिंट–मीडिया, हो या टेलीविजन, सिनेमा या रेडियो हो, समाज का प्रत्येक स्त्री–पुरूष यहां तक कि ग्रामीण भी, वह उन्हें अपने दैनिक जीवन का अंग मान चुके है, लेकिन जब वह सपरिवार बैठकर मीडिया द्वारा प्रसारित कार्यक्रमों को देखते हैं तब कोई कामुक, अष्लील दृष्य अथवा विज्ञापन देखकर सब असहज हो जाते हैं और नजरें जमीन पर गड़ा देते हैं अथवा मुंह फेर लेते है। मीडिया में नारी फैषन, सौन्दर्य प्रसाधन, एड्स के बचाव, गर्भ निरोध उपाय संबंधी विज्ञापनों में भारतीय प्राचीन परम्परागत परिधानों कि विलुप्ति होकर पाष्चात्य परिधानों को अंगीकार कर नारी को अष्लीलतम् रूप में प्रदर्षित किया जाने लगा। जिससे भारतीय नारी की मर्यादाएं टूटने लगी। अब नईं मर्यादाएं अनुषासन और व्यवहार के ढ़ग बनने लगे। परिवार में रिष्तों का स्वरूप भी बदलने लगा। रिष्ते अब औपचारिक बन गये है और रिष्तों की गंभीरता घटने लगी है। पहले परिवार और समाज में अनुषासन, मर्यादा, लज्जा, षर्म, संकोच, पारंपरिक संस्कार होता था। कभी पति–पत्नि बच्चों के सामनें या बच्चे बुजुर्गो के सामने मजाक नहीं करते थे। लेकिन आज तो मीडिया के विज्ञापनों के अष्लील दृष्य संपूर्ण परिवार अत्यंत सहजता से देखता है। विज्ञापनों मे नारी की ग्लैमरस, सेक्स सिंबल, और फैषनेबल छबि जिस रूप में प्रस्तुत की जाती है, समाज विषेषकर महिलाएं उसका अंधानुकरण करती है। जिससे समाज पर आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक दुष्प्रभाव बढ़ रहा है। आचरण स्वच्छन्द होते जाने से चाहे वह संयुक्त परिवार हो या एकल परिवार दोनो ही तनाव के दौर में गुजरने लगे और परिवारों में विघटन/बिखराव भी दिखाई देने लगा। न्यायालय में तलाक के प्रकरणों की संख्या भी बढ़ने लगी है। विज्ञापनों ने परिवारों में आर्थिक और मानसिक तनाव उत्पन्न कर दिया है।

निष्कर्षः – अंततोगत्वा यह कहा जाना उचित होगा कि मीडिया ने जहां नारी जागृति कर सषक्तिकरण का मार्ग प्रषस्त कर नारी को धैर्य, संयम, संवेदनषील, परिश्रमी, उद्यमी, साहसी, पराक्रमी बनाकर प्रत्येक क्षेत्र में उच्चस्थ स्थान प्राप्त करने में महती भूमिका निर्वहित की है, वहीं समाज और परिवार जो आज भी अनुषासन, मर्यादा, षील, संकोच की अपेक्षा करता है। तथा अपनी सीमित आय पर सुखमय जीवन जीनें की अपेक्षा करता है उसमें विसंगति उत्पन्न कर दी है। नारी मां, दादी है, लेकिन नारी पुत्री एवं पुत्रवधु भी है दोनों में विविध कारणों से आर्थिक, मानसिक, पारिवारिक, सामाजिक तनाव तथा कुठाएं भी उत्पन्न हो गयी है। अतः आवष्यक है कि मीडिया नारी सषक्तिकरण की अपनी श्रेयस्कर

भूमिका को और अधिक तेज करे ही साथ ही देष, समाज, परिवार एवं व्यक्ति की अपेक्षाओं की सूक्ष्म समीक्षा कर उसकी आत्मा को अक्षुण्य बनाये रखने का प्रयत्न भी करें।

संदर्भ साहित्य

1. दुबे, एस. सी., 1960, "दी ऑब्जेक्टिव सोसायटी'', प्रेज़िलर, न्युयॉर्क।
2. रॉजर्स, ई. वी., 1969, मॉर्डनाइजेषन ऑन अमंग वीजेन्ट : दी इम्पेक्ट ऑफ कम्युनिकेषन'', हॉल्ट, रिनेहर्ट एण्ड विन्सटन इन्क, न्युयॉर्क।
3. गुलाटी, एस., 1985, ''वुमेन एण्ड सोसायटी'', षेखर प्रकाषन, इलाहाबाद।
4. रविन्द्र कुमार मिश्र, 2009, ''वर्तमान सामाजिक परिवेष में महिला सषक्तिकरण'', विजय प्रकाषन मंदिर, वाराणसी ।
5. घादियाली, रेहाना, 1988, सम्पादित, ''वुमेन इन इण्डियन सोसायटी : ए रीडर'' सेज पब्लिकेषन।
6. गोपालन, सरला, 2002, ''टुवर्डस् इक्वालिटी : दी यूनीफिनिष्ड एजेण्डा, स्टेटस ऑफ वुमन इन इण्डिया'', नेषनल कमीषन फॉर वुमन, नई दिल्ली।
7. राय, भारती, 2005 ''वीमेन ऑफ इण्डिया : कॉलोनियन एण्ड पोस्ट कॉलोमियल पीरियड्स (हिस्ट्री ऑफ साइंस, फिलॉसफी, एण्ड कल्चर इन इण्डियन सिविलाइजेषन, पार्ट–3), सेज पब्लिकेषन।
8. Media's role in society, Available at http://www.directessays.com/viewpaper/23303.html.